भारतीय जनता पार्टी का राजनीतिक समाजशास्त्र राजनीतिक–समाज ाास्त्रः

वर्ष 2017 उ0प्र0 विधानसभा चुनाव व परिणाम एक विश्लेषण

डॉ0 सुधीर कुमार पाण्डेय
सहायक अध्यायपक
बापू इण्टर कालेज पीपीगंज, गोरखपुर

हाल ही में सम्पन्न विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। इस सफलता के पीछे भाजपा का माइक्रो सामाजिक मैनेजमेण्ट रहा। भाजपा तो निरन्तर यह दावा कर रही है कि वह अपने विकासवादी नीति के कारण उत्तर प्रदेश के मतदाताओं की पसन्द बनी वैसे इन दावों को पूर्ण रूप से नकारा नहीं जा सकता लेकिन कुछ अन्य कारक और भी है जिनसे भाजपा ने अपना प्रभाव समाज पर कायम किया और सफलता प्राप्त की इसमें प्रमुख रूप से जातिगत समीकरण, धार्मिक कारक, राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करना आदि महत्वपूर्ण रहा। हालांकि भाजपा द्वारा बार–बार यह दावा किया जा रहा है कि मतदाता जाति, धर्म व वर्ग के बन्धनों को तोड़कर भाजपा को वोट किये हैं।

जहाँ तक जाति के प्रश्न पर यदि विचार किया जाये तो jtuh dksBkjh ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि भारतीय जनता एवं जाति व्यवस्था के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में यह आशा करना कि जनतंत्रीय संस्थाओं की स्थापना के बाद जाति व्यवस्था का लोप हो जाना चाहिए एक भ्रामक एवं त्रुटिपूर्ण विचार है उन्होंने यह दावा किया है कि कोई भी सामाजिक तन्त्र कभी भी पूर्णतया समाप्त नहीं हो सकता।[1] अतः उत्तर प्रदेश के राजनीति में जातियों के समीकरण को नकारना व्यर्थ है।

भाजपा द्वारा केशव प्रसाद मौर्या को प्रदेश अध्यक्ष बनाना और उनको प्रोत्साहन देना कहीं न कहीं उत्तर प्रदेश के मौर्या जाति को भाजपा की ओर आकर्षित करना ही है। पूर्व में जब स्वामी

प्रसाद मौर्या बी0एस0पी0 में थे तो इनका प्रभाव मौर्या जाति पर स्पष्ट रूप से था लेकिन राजनीतिक अवसरवादिता का लाभ लेने के लिए स्वामी प्रसाद मौर्या भाजपा में सम्मिलित हो गये। स्वामी प्रसाद मौर्या के भाजपा में सम्मिलित होने से बहुजन समाज पार्टी का मौर्या वोट बैंक बिखरा, जिसको भाजपा ने केशव प्रसाद मौर्या के माध्यम से अपने पक्ष में करने में सफलता प्राप्त की।[2]

उत्तर प्रदेश की राजनीति में कुर्मी वोट बैंक का महत्वपूर्ण स्थान है मिर्जापुर, प्रतापगढ़, फैजाबाद, गोण्डा, बस्ती आदि जिलों में इनकी संख्या पर्याप्त है। उत्तर प्रदेश में इनकी संख्या लगभग 3 प्रतिशत है। भाजपा ने वर्ष 2014 के लोक सभा के चुनाव में अपार सफलता प्राप्त करने के बाद ही उत्तर प्रदेश में कुर्मी वोट बैंक पर अपना प्रभाव बनाना प्रारम्भ कर दिया था। भाजपा द्वारा सरदार पटेल के स्टेचू के निम्रण हेतु लोहे को एकत्रित करने के लिये आम जनता से आग्रह किया गया तथा विशेष फोकस उत्तर प्रदेश पर ही रहा। सरदार पटेल के जन्म दिन को व्यापक स्तर पर मनाना, प्रदर्शनी आदि को विशेष रूप से दिखाना व प्रचार–प्रसार भाजपा द्वारा किया गया। इससे उत्तर प्रदेश में कुर्मी वोट पर प्रभाव पड़ा। वर्ष 2016 में अनुप्रिया पटेल को केन्द्र में मंत्री बनाया जाना व उनको विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया और उत्तर प्रदेश में वे सोनेलाल पटेल से बड़ा कुर्मी नेतृत्व बनकर उभरी। अनुप्रिया पटेल के प्रभाव के कारण कुर्मी समाज को भाजपा अपने पक्ष में करने में सफल रही।[3]

उत्तर प्रदेश में यदि दलितों की संख्या देखी जाये तो यह लगभग 23 प्रतिशत के है। दलित वोट बैंक बहुजन समाज पार्टी का माना जाता था लेकिन भाजपा ने दलितों को अपने ओर आकर्षित करने का प्रयास किया। भाजपा ने अम्बेडकर कार्ड खेला और दलितों का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की ।भाजपा अम्बेडकर को एक साध्य के तौर पर देख रही है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने दिल्ली के अम्बेडकर मेमोरियल तथा उनके जन्म दिनके मौके पर राजनीति करते हैं।

उन्होंने कभी भी उनके बारे में नहीं सोचा, वे बाबा साहब को एक हथियार के तौर पर देख रहे हैं जिसके जरिये उन्होंने दलित समुदाय के एक बड़े हिस्से से छल किया है।

भाजपा दलित समुदाय में अपनी पैठ बनाने के लिये बौद्ध भिक्षुओं का भी सहारा लिया। तीन चरणों का अभियान चलाया जिसे धम्म चेतना यात्रा कहा यह यात्रा उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में डा0 धम्म विरियो के नेतृत्व में वाराणसी से प्रारम्भ की गयी और समस्त उत्तर प्रदेश में यह धम्म चेतना यात्रा चली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने वाराणसी में दलित के यहाँ भोजन किया। प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा भीम ऐप की शुरूआत करना, परिणाम स्वरूप दलित वर्ग भाजपा की ओर आकर्षित हुए।[4]

भाजपा ने राजभर जाति के लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिये भारतीय समाज पार्टी के साथ समझौता किया पूर्व समय में भारतीय समाज पार्टी उत्तर प्रदेश के राजभर समुदाय में अपनी पकड़ बना चुकी थी इसके भाजपा के साथ गठबन्धन करने से राजभर समुदाय का समर्थन भाजपा को प्राप्त हुआ।

उत्तर प्रदेश में तेली जाति की संख्या लगभग 2 प्रतिशत है इस जाति के लोग अपने आपको मोदी मानते हैं। परिणामस्वरूप माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी को इनका समर्थन मिल रहा है। अतः तेली समुदाय का वोट भाजपा के पक्ष में गया।

भारतीय जनता पार्टी परम्परागत रूप से ब्राह्मण क्षत्रिय व बनिया की पार्टी मानी जाती थी । उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणों की जनसंख्या लगभग 13 प्रतिशत है तथा क्षत्रिय 7 प्रतिशत, इनको जोड़ने के लिये भाजपा ने प्रयास किया तथा इनका समर्थन प्राप्त करने में सफल भी रही।

इसी प्रकार भाजपा ने तीन तलाक का मुद्दा लेकर कहीं न कहीं मुस्लिम महिलाओं को अपने पक्ष में आकर्षित किया। शिया सम्प्रदाय में पढ़े–लिखे मुसलमानों की संख्या अधिक है साथ में घरेलू हिंसा का दंश झेल ही रही मुस्लिम महिलाओं सहित उनके अन्य रहनुमाओं ने भाजपा

सरकार के विकास एवं तीन तलाक पर किये गये पहल को पसन्द किया। अभी हाल में सहारनपुर की आतिया साबरी और और उनके परिजनों ने मीडिया से मुखातिब होकर कहा कि विधानसभा चुनाव में वे भाजपा प्रत्याशी को वोट किये है, क्योंकि आतिया तीन तलाक के फरमान से पीड़ित है।

मुसलमान वोट बैंक जो उत्तर प्रदेश में 19.6 प्रतिशत के करीब है इसको अपने पक्ष में करने के लिये अन्य पार्टियॉ बसपा कांग्रेस व सपा ने भी भरसक प्रयास किया उसका लाभ उन्हें मिला भी है। मुस्लिम वोट बैंक के लालच में राहुल गॉधी जहां देवबन्द, दारूलउलूम लखनऊ के नदवातुल उलमा की देहरी तक गये वहीं पर मायावती के रैलियों का आगाज कुरान के आयतों से किया जाने लगा। बसपा ने 97 टिकट मुस्लिमों को दिया तथा अनेकों उलेमाओं ने मुस्लिम समुदाय से बसपा को वोट देने का अपील कर रहे थे।

मुलायम सिंह यादव द्वारा अखिलेश यादव को मुस्लिम विरोधी होने का बयान आया। अब मुस्लिम मतदाता सपा को शंका की दृष्टि से देखने लगे थे। हालांकि अभी भी मुस्लिम मतदाता तय नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें। ऐसी स्थिति में मुस्लिम वर्ग के कुछ लोग बसपा की ओर भी देखने लगे। मायावती वर्ष 2017 के चुनाव को मुस्लिम वोट तथा दलित वोट को आपस में जोड़ कर सामाजिक मैनेजमेन्ट करना चाहती थी लेकिन यदि भारतीय समाज के परम्परागत स्वरूप को देखा जाये तो मुस्लिम और दलित को जोड़ना लगभग असम्भव है क्योंकि आज भी अधिकतर दलितों के यहॉ धार्मिक कुत्यों में कुछ ऐसे पशुओं के मांस को खाया जाता या उनको पाला जाता है जिसका नाम भी मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग नहीं सुनना चाहते है। ऐसी स्थिति में मायावती का यह मकैनिज्म फेल हो गया और ज्यादातर दलित मतदाता भाजपा को समर्थन कर दिये। वहीं पर मुस्लिम मतदाता बंट गये कुछ ने बसपा को वोट किया तो कुछ ने सपा तथा कुछ ने विकास

(भाजपा) को वोट किया तो कुल मिलाकर मुस्लिम मतदाता बिखर गये परिणामस्वरूप लाभ भाजपा को मिला।[6]

यदि भाजपा का धर्म कार्ड देखा जाये तो ये हिन्दुओं को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रही। उत्तर प्रदेश में 80 प्रतिशत हिन्दु सम्प्रदाय के लोग है तथा 20 प्रतिशत मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग है लेकिन इन 80 प्रतिशत लोगों में अनेक जातियों उपजातियों आदि में विभाजन है लेकिन यदि 80 प्रतिशत एकत्रित हो जाय तो सत्ता कहीं और जा ही नहीं सकती । इस 80 प्रतिशत को एकत्रित करने का एक मात्र उपाय धर्म है जो इन्हें सांस्कृतिक रूप से आपस में जोड़ता है।[7] भाजपा द्वारा हर–हर मोदी, नमो बम–बम काशी बोल रहा है,जय श्री राम मंदिर वहीं बनेगा आदि स्लोगनों द्वारा हिन्दू मतदाताओं को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया गया। भाजपा द्वारा 403 विधान सभा सीट में एक भी टिकट मुस्लिम वर्ग के लोगों को नहीं दिया गया। परिणाम स्वरूप हिन्दूओं का अधिकतम समर्थन भाजपा को मिला।

भारत युवाओं का देश है और उत्तर प्रदेश भी इससे अछूता नहीं है। उत्तर प्रदेश में युवा मतदाताओं की एक निर्णायक जनसंख्या है और यह मनोविज्ञान का स्वरूप तथ्य है कि युवावस्था में युवा एक दम तूफान की तरह होते हैं वे कल्पनाओं में रहते है स्वतंत्र रहना चाहते है वे एक आदर्शवादी सोंच रखते है वे निडरता के साथ रहना चाहते है उनमें देश भक्ति का जुनून होता हैं।भाजपा को इस चुनाव में उसके द्वारा प्रोत्साहित किये गये राष्ट्रवाद की भावना जिसमें संविधान दिवस मनाना, जरा याद करो, कुर्बानी, सर्जिकल स्ट्राइक, बार्डर पर सैनिकों के लिये राखी भेजना आदि चीन व पाकिस्तान के प्रति कठोर नीति अपनाने का संदेश देना आदि ने युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया तथा उनका समर्थन भाजपा को मिला। अभी हाल में प्रधान मंत्री मोदी जी ने संचार माध्यमों के जरिये कक्षा 12वीं के छात्रों में अपनी पहुंच बनाने को कहा इनमें अधिकतर वर्ष 2019 में प्रथम बार अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगें।

इसके साथ–साथ भाजपा ने अपने विकासवादी छवि को कायम रखने में कोई कसर नहीं छोड़ा भाजपा सरकार के जन धन योजना के तहत उत्तर प्रदेश में करीब 4 करोड़ गरीबों के बैंक खाते खोले गये इसी कड़ी में 1.1 करोड़ लोगों का बहुत ही कम प्रीमियम पर बीमा भी किया गया मुद्रा योजना के तहत उत्तर प्रदेश में 62,05,625 लोगों को 23 हजार करोड़ रूपये का कर्ज दिया गया एक आंकलन के अनुसार इससे लगभग एक करोड़ से अधिक रोजगार का सृजन हुआ।[8]

उज्जवला योजना के तहत उत्तर प्रदेश में 52 लाख से अधिक गरीब परिवारों को मुफ्त रसोई गैस की सुविधा दी गयी। स्वच्छता अभियान के तहत लाखों लोगों को शौचालय की सुविधा दी गयी। उत्तर प्रदेश में 6280 करोड़ की लागत से 865 कि0मी0 राष्ट्रीय राज्य मार्गों का निर्माण व 1464 गॉव में विद्युतीकरण किया गया साथ ही भाजपा के संकल्प पत्र में किसान कर्ज माफी की बात की गयी।

उपरोक्त आधार पर भाजपा ने एक बेहतरीन राजनीतिक समाजशास्त्र साधा परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश में 325 सीटों के साथ प्रचण्ड बहुमत प्रापत किया वहीं पर वर्ष 2012 के आम चुनाव में इसे मात्र 47 सीटे ही प्रापत हुई थीं वर्ष 2017 के चुनाव में जहां भाजपा का मत प्रतिशत 39.80 प्रतिशत हो गया वहीं पर सपा 21.8 प्रतिशत, बसपा 22.2 प्रतिशत व कांग्रेस को मात्र 6.2 प्रतिशत पर ही संतोष करना पड़ा।

पुनः भाजपा मुख्यमंत्री के चयन में अपने राजनीतिक समाजशास्त्र पर नजर रखते हुये वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव को देखते हुये संतुलन स्थापित कर प्रखर हिन्दूवादी नेता महंग योगी आदित्यनाथ जी को मुख्यमंत्री बनाया तथा केशव प्रसाद मौर्या डॉ0 दिनेश शर्मा को उप मुख्यमंत्री बनाया गया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अपनी कैबिनेट में पूरा ध्यान जातिगत समीकरणों पर केन्द्रित किया है । उनकी सरकार में सात क्षत्रियों और 8 ब्राह्मणों को स्थान मिला

ही है। साथ ही 17 पद अन्य पिछड़ी जातियों और 6 अनुसूचित जातियों को शामिल किया गया है। इसके अलावा कायस्थ और वैश्य बिरादरी को मिलाकर 8, जाटों को 2 तथा 1 मुसलमान को भी उन्होंने अपनी कैबिनेट में जगह दिया है। यह संतुलन मुख्य रूप से 2019 के चुनाव को ध्यान में रखकर किया गया है।

अर्थात् भाजपा ने जातियों व धर्म, राष्ट्रवाद, विकास व अन्य माध्यमों से वर्ष 2017 के उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में एक माइक्रो राजनीति समाजशास्त्र का प्रयोग किया तथा सफल रही और भाजपा का अगला रणनीति फिलहाल इसी मैकेनिज्म पर चल रहा है।

सन्दर्भ सूची

1– रजनी कोठारीः कास्ट इन इण्डियन पोलिटिक्स

2– बी0बी0सी0 हिन्दी समाचार

3– दैनिक जागरण

4– हिन्दुस्तान

5– भारत की जनगणना 2011

6– यू0पी0 ओपीनियन पोल इन/2016/2017 कास्ट वाइज पापुलेशन इन उ0प्र0

7– इण्डिया टुडे, आउटलुक

8– परिचर्चा राज्य सभा टी0वी0, नेशनल न्यूज